महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

चौकमाफी पीपीगंज गोरखपुर उत्तर प्रदेश २७३१६५

Mahayogi Gorakhnath Krishi Vigyan Kendra

Chaukmafi (Peppeganj), Jangal Kaudiya Gorakhpur, U.P-273165

Website : http://www.mgkvk.in Email: gorakhpurkvk2@gmail.com

डॉ विवेक प्रताप सिंह, विशेषज्ञ - पशुपालन

बच्चेदानी का बाहर निकलना

इस रोग मे योनि अथवा बच्चादानी, योनिद्वार से बाहर निकल आती है। यह समस्या गर्भावस्था के आखिरी महीनों से लेकर बच्चा देने के 1–2 महीने तक कभी भी हो सकती है। बच्चेदानी बाहर निकलने के निम्न कारण हो सकते हैं –

व्याने के पूर्व कारण :

- पशु शरीर में कैल्शियम की कमी इसका प्रमुख कारण होता है।
- पशु को कब्ज होने के कारण।
- प्रोजेस्टोन नामक हारमोन की कमी के कारण।
- पिछले ब्यांत में कठिन प्रसव व बच्चे को गलत तरीके से खींचना हो सकता है।

प्रसव के बाद के कारण :

- प्रसव के दौरान होने वाला प्रोलेप्स सबसे अधिक खरतनाक होता है।
- प्रोलेप्स होने पर भैस बैठी रहती है तथा गर्भाशय बाहर निकल आता है।
- यदि बच्चादानी बाहर निकलने की समस्या प्रसव के कुछ दिनों बाद आती है तो उसका मुख्य कारण बच्चेदानी में कोई घाव या संक्रमण होता है।
- घाव या संक्रमण प्रसूति के समय गलत तरीके से बच्चा खींचने से अथवा जेर रूकने गंदे हाथों से जेर निकालने से हो सकता है।
- योनि में जलन होने के कारण भैंस अक्सर पीछे की ओर जोर लगाती है जिससे बच्चादानी बाहर आ जाती है।

प्रसव से पहले प्रोलेप्स होने की स्थिति में ध्यान देने योग्य बातें :

- भैंस को ऐसे फर्श पर बाँधे जो आगे से नीचा व पीछे से 3–4 इंच ऊँचा हो।
- बाड़ा चारों ओर से सुरक्षित व बंद होना चाहिए ताकि कुत्ते व कौवे ऐसे स्थान से दूर रहें। कुत्ते और कौवे शरीर के बाहर निकले हुए भाग को काटकर खाने लगते हैं जिससे पशु को काफी नुकसान पहुँच सकता है।
- भैंस बाँधने का स्थान साफ–सुधरा होना चाहिए।
- भैंसों को सूखा भूसा या चारा न खिलाएं, हरा चारा खिलाएं तथा दाने में चोकर की मात्रा बढ़ा दें।
- भैंस के दाने में प्रतिदिन खनिज मिश्रण अवश्य मिलायें।
- योनि को धीरे–धीरे अंदर धकेलने का प्रयास करना चाहिए योनि अंदर हो जाने के बाद उस पर नर्म रस्सी की गोन्डी/एड़ी बाँध देनी चाहिए। यह ध्यान रहे एड़ी अधिक कसी न जाये। पेशाब के लिए 3–4 उंगलियों का रास्ता रहे।

प्रसव के दौरान ध्यान देने योग्य बातें

- प्रसव के बाद प्रोलेप्स होने पर भैंस को अन्य पशुओं से अलग बाँध कर रखे।
- गर्भाशय को लाल दवायुक्त ठण्डे पानी से धो दें ताकि इस पर भूसा व गोबर न चिपका रहे। गर्भाशय को एक गीले तौलिया से ढक दे ताकि गर्भाशय सूखने न पाये तथा उस पर मक्खियाँ न बैठे।
- शरीर के निचले भाग की सफाई का विशेष ध्यान दे तथा उसे पैरों द्वारा कभी अंदर न धकेले। जेर रूकने पर उसे निकालने के लिए अधिक जोर नहीं लगाना चाहिए।
- गर्भाशय में बच्चा फँसने पर उसे जबरदस्ती नहीं निकलवाना चाहिए।
- भैंस को कैल्शियम युक्त खनिज मिश्रण नियमित रूप से खिलाना चाहिए। गंभीर स्थिति होने पर पशु चिकित्सक को बुला लेना चाहिए।